Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 3, July-September, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

नालंदा की सांस्कृतिक विरासत 52 बूटी

Shanti kumari
pursuing PhD,SRF,M.M.H college
ghaziabad chaudhari charan singh university

52 बूटी नालंदा जिला की सांस्कृतिक पहचान है जिसमें 52मोटिफ्स का प्रयोग किया जाता हैं यह मोटिफ्स विभिन्न धर्मों विशेषकर कर बौद्ध जैन हिंदू धर्म से संबद्ध है यह एक हस्तकला का स्वरूप है जिसमें बुनकर अपने हस्त कौशल का प्रयोग करते हुए साड़ियों पर एक अतिरिक्त धागों की सहायता से मोटिफ्स को एक सुंदर स्वरूप प्रदान करते हैं इस विलुप्त होती कला को वर्तमान में भारत एवं बिहार सरकार व सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं के द्वारा पुनर्जीवित किया जा रहा है।

इस कला का उद्भव एवं विकास छठी शताब्दी ईसा पूर्व माना जाता हैं। पौराणिक कथा के अनुसार भगवान विष्णु के पांचवें अवतार वामन से इस कला का नामकरण किया गया है वामन अवतार से भगवान विष्णु ने संपूर्ण विश्व को अपने पगो से नाप था उसी प्रकार बावन बूटी कला में बुनकरों द्वारा साड़ी पर सृष्टि के संपूर्ण रूपों को मोटिफ्स कि सहायता से सुसज्जित किया जाता है । इस कला का एक अन्य व्याख्या भी किया जाता है बुनकरों तथा स्थानीय लोगों के द्वारा 52 बूटी कला का नामकरण साड़ी पर बने 52 मोटिफ्स के कारण, कहा जाता है साड़ियों पर एक ही मोटिफ्स विशिष्ट अथवा अन्य मोटिफ्स को 52बार धागों के सुंदर समन्वय के साथ बनाया जाता है

बावनबूटी में मोटिफ्स के 52 विशिष्ट डिजाइन के प्रकार को एक-एक कर 52 बार या 52 प्रतिको को साड़ियों पर बुनाई की जाती है इन 52 मोटिफ्स में कमल का फूल स्तूप,पीपल का पत्ता,ताश का पत्ता त्रिशूल, फूलदान, घोड़ा शंख,मछली व ज्योमैट्रिकल एवं सिमिट्रिकल के तहत बहुततेरे डिजाइन बनाए जाते हैं बुनकरों के द्वारा डिजाइन बनाने में रंगों का संयोजन बड़े ही सावधानी पूर्वक किया जाता हैं जो उत्पाद एवं डिजाइन की सुंदरता को प्रदर्शित करते हैं। इस कला में उत्पाद के रूप में विशेषत: साड़ी पर डिजाइन बनाए जाते हैं किंतु इसके साथ-साथ अन्य उत्पाद भी बनाए जाते रहे है जैसे पर्दा, चादर,कुशन कवर, टेबलक्लॉथ, गमछा, दुपट्टा आदि।

इस कला में विभिन्न धर्मों का समन्वय देखा जाता है जैसे हिंदू ,मुस्लिम, बौद्ध एवं जैन धर्म आदि।हिंदू धर्म से संबंधित पवित्र प्रतीक चिन्हों का प्रयोग बुनकरों द्वारा डिजाइन के रूप में किया जाता हैं जैसे त्रिशूल,पान का पत्ता,पीपल का पत्ता आदि का हिंदू धर्म में विशेष महत्व रखता है त्रिशूल के डिजाइन से बने उत्पादों को लोगों के द्वारा मांगलिक पर्व त्योहार में प्रयोग किए जाते हैं इसी तरह से कला में बौद्ध धर्म के पवित्र प्रतीक का प्रयोग डिजाइन के रूप में करके इसे शुभ उत्पाद बनाते हैं जैन धर्म के कुछ धार्मिक प्रतीक चिन्ह का प्रयोग जैसे सांड का एकल चित्र तथा छोटे-छोटे चित्र की बुनाई, हिरण की बुनाई, दीपक का चित्र आदि का प्रयोग करते हैं मुस्लिम धर्म के प्रतीक चिन्ह सिमिट्रिकल एवम् ज्योमैट्रिकल डिजाइन का प्रयोग कर यह हस्तशिल्प धार्मिक समन्वय का प्रतीक प्रतिबिंबित करता है

52 बूटी कला का उद्भव एवं विकास नालंदा जिला के बसवान बीघा, नेपुरा, श्रीचंद्रपुर एवं बिहारशरीफ के सोहसराय,जगदलपुर, खासगंज आदि क्षेत्र में इससे जुड़े कई बुनकर 52 बूटी हस्तशिल्प का कार्य करते हैं। इस कला में बुनकर सूती एवं सिल्क वस्त्रों पर मोटिफ्स को बनाते हैं बसवान बीघा के बुनकरों द्वारा सूती कपड़ों पर 52 बूटी का डिजाइन बनाते हैं वही नेपुरा के बुनकर तसर सिल्क के कपड़ों पर डिजाइन बनाते हैं बसवान बीघा के स्वर्गीय कपिल देव सर द्वारा दिए गए साक्षात्कार में उन्होंने बिहार शरीफ में एक बनाई स्कूल का जिक्र किया था जहां बुनकरों को प्रशिक्षण दिया जाता था किंतु वर्तमान में इसके साक्ष्य के रूप में एक दीवार बची है इससे यह स्पष्ट होता है कि नालंदा जिला में बुनकारी का काम बहुत ही बड़े पैमाने पर किया जाता था ।

इस हस्तशिल्प क्षेत्र में कई सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाएं कार्य कर रही है सरकारी संस्थानों में पटना स्थित उपेंद्र महारथी शिल्प अनुसंधान संस्थान, बसावन बीघा प्राथमिक बुनकर सहयोग समिति लिमिटेड है वहीं गैर सरकारी संस्थानों में बुनकर बिहार, सृजनी फाउंडेशन, एशियन हेरिटेज फाउंडेशन आदि हैं यह सभी संस्थाएं बुनकरों को कच्चा माल उपलब्ध कराती हैं साथ ही बने उत्पाद को बाजार भी प्रदान कराती हैं बुनकरों के लिए समय-समय पर प्रशिक्षण कार्य भी आयोजित करवाती हैं जिससे समय के साथ 52 बूटी कला के बुनकरों की कार्य कुशलता बनी रहे।

इस कला में संलग्न कलाकारों में प्रमुख स्थान पद्मश्री प्राप्त स्वर्गीय कपिल देव प्रसाद जी हैं जिन्होंने 52 बूटी कला को विलुप्त होने से बचाया है इन्हीं के साथ-साथ कई बुनकर जैसे कमलेश कुमार, रंजीत तांती, अमित कुमार,वीरमणि कुमार, अखिलेश कुमार,लोटा तांती आदि हैं इन कलाकारों के पीढ़ियां वर्षों से 52 बूटी का काम करते आ रहे हैं जो आज भी जारी है किंतु यह चिंताजनक विषय की बात है कि यह कला प्रतिष्ठित होते हुए भी उतनी बाजार मूल्य प्राप्त नहीं किया है जिससे बुनकर इस कला को बचा सके। आजीविका के साधन होते हुए भी कलाकारों को कोई ठोस आर्थिक मजबूती प्रदान नहीं की गई है जितनी अन्य कला कर रही है दिन प्रतिदिन धागों के मूल्य में बढ़ोतरी प्राकृतिक रंगों की अनुपलब्धता, बुनकरों को समय-समय पर प्रशिक्षण न मिलाना,आर्थिक सहायता न प्राप्त होना और ना ही बने उत्पाद का उचित मूल्य प्राप्त होना यह सभी समस्याएं 52 बूटी कला में विद्यमान है जिसे समय रहते दूर करने की आवश्यकता है हालांकि सरकार के द्वारा कई ऐसे सहायकी कार्य किया जा रहे हैं किंतु यह सहायता सभी बुनकरों एवं कलाकारों के लिए अपर्याप्त हैं।

52 बूटी कला नालंदा जिला की एक सांझी पारंपरिक विरासत है यह कला विभिन्न धर्म का समन्वय करता है लोक कला स्थानीय लोगों में सांस्कृतिक जुड़ाव के साथ-साथ सौहार्द में अभिवृद्धि करती है इस कला को जन जन तक आगे बढ़ाने की जरूरत है जिससे बिहार की सांस्कृतिक गौरव को प्रतिष्ठित किया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

प्राथमिक स्रोत

1. साक्षात्कार द्वारा डेटा प्राप्त:-

साक्षात्कार पद्मश्री कपिलदेव प्रसाद,Date-24/01/2025

साक्षात्कार वीरमणि कुमार

द्वितीय स्रोत

2. सिंह अशोक कुमार बिहार के हस्तशिल्प प्रथम संस्करण 2017 पृष्ठ संख्या 90-91प्रकाशक उपेंद्र महारथी शिल्पअनुसंधान संस्थान पटना
3. चट्टोपाध्याय कमलादेवी भारतीय हस्तशिल्प परंपरा पृष्ठ संख्या 39 प्रशासन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली 1992
4. सहाय डॉक्टर शिवस्वरूप प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास पृष्ठ संख्या 390 पंचम संस्करण 2020 मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली
5. योजना भारत का ताना-बाना मई 2024 अंक संख्या 05 पृष्ठ संख्या 7
6. Sing Martand,dhishti Rta kapur,saris of india page no38-39,1995
7. Omalley L.s.s.,Bengal District Gazettee Patna page no 138-139,vol-8,1904